ट्रूमैन सिद्धान्त (Truman Doctrine)

अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं से बढ़ती निराशा और इस विश्वास ने कि अमेरिकी शक्ति का इन घटनाओं के दिशा निर्धारण पर नियंत्रण होना चाहिए, संयुक्त राज्य को विश्व राजनीति में धकेल दिया। संयुक्त राष्ट्र में संयुक्त राज्य की अंतर्राष्ट्रीयता की सामान्य भावना की बचनबद्धता धीरे-धीरे संयुक्त राष्ट्र के बाहर विशिष्ट चुनौतियों का सामना करने के लिए विशिष्ट प्रतिबद्धताओं में बदल गई। इनमें से पहला ट्रूमैन सिद्धान्त था जो संयुक्त राज्य की विदेश नीति का एक नया प्रस्थान था जिसे 12 मार्च 1947 को इस प्रकार अभिव्यक्ति मिली कि 'संयुक्त राज्य अमेरिका इन स्वतंत्र लोगों की सहायता करेगा जो सशस्त्र अल्पसंख्यकों अथवा दबाव के कारण अधीनता का जीवन बिता रहे हैं।' यूनान, टर्की, ईरान आदि देशों को साम्यवादी खेमे में जाने से बचाने के लिए ट्रूमैन ने यह निर्णय लिया कि इन्हें आर्थिक सहायता प्रदान की जाए।

तत्काल ही यूनान को बड़ी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र व अन्य सामग्री की आपूर्ति की गई। ट्रूमैन सिद्धान्त ने लोगों के आत्मनिर्णय के सिद्धान्त को मान्यता दी, इस सिद्धान्त के प्रति साम्यवादी खतरों से संयुक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा को बचाने तथा इस खतरे को रोकने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तरदायित्व को स्वीकार किया। इस ऐतिहासिक सिद्धान्त के दौरान कॉंग्रेस को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ट्रूमैन ने कहा :-

"यह राष्ट्रों के शांतिपूर्ण विकास को सुनिश्चित करने के लिए उन्हें दबाव से मुक्त करने के लिए प्रस्तुत किया गया है। संयुक्त राज्य ने संयुक्त राष्ट्र की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संयुक्त राष्ट्र का निर्माण इसके सभी सदस्यों को संभावित स्वतंत्रता एवं आत्मनिर्भरता दिलाने के लिए किया गया है। हम तब तक अपने उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकते जब तक लोगों को मुक्त संस्थाओं की स्थापना और राष्ट्रीय एकीकरण के लिए उन आक्रामक आन्दोलनों से मुक्ति नहीं दिला जो उन पर अपना सर्वाधिकारवादी शासन थोपने का प्रयास कर रहे हैं। दुनिया में जहाँ कहीं भी शांति भंग करने वाले प्रत्यक्ष या ~~अप्रत्यक्ष~~ परोक्ष कार्य होगा,

Scanned with CamScanner

वह अंतर्राष्ट्रीय शांति के आधार को दुर्बल बनाने का प्रयास माना जाएगा और इस प्रकार यहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका की सुरक्षा संकट में मानी जाएगी और वह उसको रोकने के लिए पूरा प्रयत्न करेगा।"

इस सिद्धान्त ने इस पर स्पष्ट किया कि संयुक्तराज्य अमेरिका का इस अलगाव की स्थिति में जाने का कोई विचार नहीं जैसा कि प्रथम विश्वयुद्ध के बाद किया था। इसे बाद में अवरोध या नियंत्रण की नीति (Principle of Containment) माना गया जो ट्रूमैन के सिद्धान्त का तार्किक विचार था। इसके अन्तर्गत यह सिद्धान्त निहित था कि संयुक्त राज्य अमेरिका न केवल यूरोप में अपितु समस्त विश्व में साम्यवाद को नियंत्रित करने की नीति के प्रति वचनबद्ध है। एक विख्यात अमेरिकी कूटनीतिज्ञ जार्ज एफ० केनन ने इस अवरोध को सोवियत विस्तारवाद के प्रति अमेरिकी प्रतिक्रिया माना है।

Scanned with CamScanner